सितार की प्रचलित गत शैली एवं उसमें हुए परिवर्तनों का विश्लेषणात्मक अध्ययन (विशेषकर इटावा घराने के संदर्भ में)

संगीत विषय में पी-एच. डी. उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु
प्रस्तावित रूपरेखा

शोधकर्त्री

रेखा रानी

शोध सह निर्देशिका

डॉ. नीतू गुप्ता

शोध निर्देशिका

प्रो. डॉ लवली शर्मा

संगीत विभाग, कला संकाय
दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय)
दयालबाग, आगरा - 282005

2024

भूमिका -

संगीत एक उत्कृष्ट एवं प्राचीनतम ललितकला है यह मानव हृदय में वांचित भाव उत्पन्न करने का एक सशक्त माध्यम है। संगीत में स्वर, लय, ताल इत्यादि समाहित होते हैं जो प्राणिमात्र के चित्त को आनन्द की अनुभूति प्रदान करता है। संगीत में गायन, वादन और नृत्य तीनों ही कला को एक-दूसरे का पूरक माना गया है जैसा कि पं. शारंगदेव जी द्वारा स्पष्ट किया गया है।

गीतं, वाद्यं एवं नृत्यं त्रयं संगीत मूच्यते।

अर्थात् गीत, वाद्य एवं नृत्य तीनों के सम्मिलित रूप को संगीत कहते हैं। सामान्यतः इन तीनों की अपनी अपनी विशेषताएँ रही हैं परन्तु शोधकत्री वाद्य से संबंधित है, अतः वाद्य सम्बन्धित विवरण उपलब्ध कराना अपना परम कर्तव्य समझती है। वाद्यों में चतुर्विध वाद्य वर्गीकरण सर्वविदित है। प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकत्री द्वारा विश्व प्रसिद्ध वाद्य सितार के विषय में उल्लेख किया है। लेकिन तत् वाद्य क्या है उसके बारे में जान लेना अति आवश्यक है।

तत–

तत् वाद्य ऐसे वाद्य होते हैं जिनमें धातु की तारें लगी होती हैं। ऐसे वाद्यों में ध्वनि अंगुलियों या किसी अन्य वस्तु के प्रयोग से उत्पन्न की जाती है। विद्वानों ने वादन पद्धति के आधार पर तत् वाद्यों को चार उपवर्गो में भी बांटा गया है।

- अंगुलियों से बजाए जाने वाले तत् वाद्य- जैसे तानपूरा, स्वर मण्डल, आदि।
- मिजराब (कोण या त्रिकोण), जवा आदि से बजाए जाने वाले तत् वाद्य जैसे सितार, सरोद, तंजोरी वीणा, मोहन वीणा (गिटार) रुद्रवीणा आदि।
- गज (बो) या कमानी से बजाए जाने वाले तत् वाद्य- जैसे वायलिन (बेला) सारंगी, इसराज, दिलरुबा आदि।
- लकड़ी की छड़ी से बजाए जाने वाले तत् वाद्य- जैसे सन्तूर, कानून आदि।

प्राचीन समय में तत वाद्य के अन्तर्गत प्राचीन मत्तकोकिला, एक तंत्री, विपंची, किन्नरी वीणा इत्यादि आते थे।

वर्तमान समय में सितार, सरोद वायलिन इत्यादि आते हैं। तत् वाद्य के अन्तर्गत आने वाला सितार के विषय में यहाँ पर शोधकत्री द्वारा विस्तृत विवरण दिया जा रहा है। क्योंकि शोधकत्री स्वयं सितार की छात्रा है तथा यह अध्ययन कार्य भी सितार विषय पर ही आधारित है।

भारतीय संगीत में सारिका युक्त तंत्री वाद्यों में सितार का स्थान आज के युग में शीर्षस्थ् है। आधुनिक युग में सर्वाधिक प्रसिद्ध तत वाद्य सितार 18वीं शताब्दी से विकसित होता हुआ अपने वर्तमान रूप में पहुंचा है।

सितार वाद्य एक ऐसा वाद्य है जिसमें मध्यकाल के अन्तिम समय से लेकर आधुनिक काल तक कुछ न कुछ परिवर्तन होते रहे जिसके कारण सितार ने अपनी एक अलग ही पहचान बनायी न कि भारत में ही अपितु विदेश में भी इसका श्रेय महान कलाकारों का रहा है जिन्होंने सितार की वादन शैलियों में परिवर्तन और परिमार्जन किया और सितार वाद्य के बनावट में परिवर्तन किया है जिनमें कुछ विश्व प्रसिद्ध नाम उदाहरण स्वरूप इस प्रकार हैं- जैसे इमदाद खाँ साहब ने तरब के तारों को सितार में जोड़ा, विलायत खाँ साहब ने दो जोड़ी के तारों में से एक जोड़ी का तार निकालकर छः तारों वाले सितार का प्रचलन किया। तत्पश्चात् पं. रवि शंकर जी ने अति मंद्र पंचम का तार सितार में जोड़ा, पं0 बुद्धादित्य मुखर्जी जी ने टप्पा शैली का प्रयोग सर्वप्रथम सितार पर किया। इस आधार पर हम कह सकते हैं कि सितार में धीरे-धीरे आवश्यकतानुसार परिवर्तन हुये। अगर सितार की उत्पत्ति के विषय में देखा जाये तो इसमें विद्वानों के भिन्न-भिन्न मत रहे हैं। सितार का जब धीरे-धीरे विकास हो रहा था उसी के अनुसार सितार को अलग-अलग नामों से भी पुकारा जाने लगा। किसी ने त्रितंत्री, त्रितंत्री को ही जंत्र या यंत्र कहकर पुकारा, किसी ने सहतार कहकर पुकारा और माना यह जाता है कि सहतार से ही सितार नाम में परिवर्तन हुआ। सितार की उत्पत्ति के साथ ही सितार के घरानों का ही जन्म हुआ।

घरानेदार संगीत भारतीय संगीत की नींव है। इस नींव के आधार पर अब तक भारतीय संगीत खड़ा है। यह घरानेदार संगीत ही भारतीय संगीत के जीवन को प्रोत्साहित करता है और जीवित रखे हैं। घराने का आविष्कार मध्यकाल में हुआ तब से ही घराने का चलन शुरु हुआ घराना जिसे हम कुटुंब, परिवार या कुल के नाम से पुकारते हैं। संगीत जगत में प्रत्येक घराने की अपनी एक विशेषता और विशिष्टता होती है- स्वर लगाने के तरीके और राग बरतने

के ढंग में। वह अपनी परंपरा अर्थात् पूर्वजों द्वारा स्थापित गायन, वादन, नृत्य शैली का सच्चा अनुयायी होता है। अपनी शैली, जो उसे पूर्वजों से मिली हैं का विशेषज्ञ बनना ही उसका लक्ष्य होता है। उसी शैली में वह कुशलता और प्रवीणता करते हुए पूर्णतः प्राप्त करने का प्रयास करता है। ऐसा होने पर धीरे-धीरे एक घ् घराने का निर्माण होता है।

ऐसा माना जाता है कि सितार के घरानों में सबसे प्रसिद्ध सेनिया घराना है। सेनिया घराने से ही अन्य घरानों की उत्पत्ति हुई और सितार के क्षेत्र में भी कई अहम योगदान दिये। सितार में पहले तीन तार होते थे, जिसको त्रितंत्री के नाम से पुकारा गया। तानसेन के वंशज मसीत खाँ ने ही त्रितंत्री वीणा में चार तार और जोड़कर इसको सात तंत्री वाला, आधुनिक रूप दिया व सितार में, वादनोपयोगी गत को भी मसीत खाँ ने सृष्टि की, मसीत खाँ ने ही मसीतखानी गतों का आविष्कार किया तथा सितार के परदों की संख्या 23 तक बढ़ाकर इसको अचल थाट वाला बना दिया। गुलाम रजा खाँ मसीत खाँ के शिष्य थे उन्होंने सितार में रजाखानी गत का निर्माण किया। सेनिया घराने के पश्चात् सितार के क्षेत्र में इटावा घराने का महत्वपूर्ण योगदान रहा। इटावा घराने को आज इमदादखानी घराने के नाम से भी जाना जाता है इटावा घराने का प्रारम्भ साहबदाद खाँ से होता है। साहबदाद खाँ के पिता का नाम तुराब खाँ था। साहबदाद खाँ ने हद्दू खाँ, हस्सू खाँ, नत्थू खाँ एवं मियाँ मौज खाँ से गायन की शिक्षा तथा निर्मल शाह से बीन की शिक्षा प्राप्त की तथा अपने समय के सुप्रसिद्ध सुरबहार वादक उस्ताद गुलाम मोहम्मद खाँ को भलीभाँति सुना था और उनसे प्रेरणा प्राप्त की थी। साहबदाद खाँ सुरबहार एवं सितार अत्यन्त कुशलता से बजाते थे।

साहबदाद खाँ साहब के दो पुत्र थे- करीमदाद खाँ एवं इमदाद खाँ। करीमदाद खाँ की मृत्यु बाल्यावस्था में ही हो गयी थी। केवल इमदाद खाँ ही जीवित थे।

इमदाद खाँ साहब बहुत ही उत्कृष्ट एवं प्रतिभाशाली कलाकार थे। ऐसा कहा जाता है कि उन्होंने सितार के परिवर्तन में बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान दिये।

सितार और सुरबहार में इमदाद खाँ साहब ने विशेष परिवर्तन और परिमार्जन किए। इमदाद खाँ साहब ने सितार में तरब की तारें जोड़ी, दोहरे झाले का प्रयोग किया मींड, घसीट आदि का प्रयोग किया केवल इमदाद खाँ साहब ने ही नहीं बल्कि उनके पुत्र इनायत खाँ साहब ने भी कई महत्वपूर्ण परिवर्तन किए उन्होंने गतों में तिहाई का प्रयोग करना

शुरु किया, तत्पश्चात् उनके पुत्र विलायत खाँ साहब ने दो जोड़ी के तारों में से एक जोड़ी का तार निकालकर छः तारों वाले सितार का प्रचलन किया वर्तमान में यह श्रृंखला यथावत चल रही है। उपर्युक्त वर्णित समस्त तथ्यों पर दृष्टिपात करने से यह ज्ञात होता है कि सितार सुमधुर वाद्य के रूप में कई विकास के चरण को पार करता हुआ आज इस उत्कृष्ट अवस्था पर विद्यमान है। चूँकिं शोधकत्री सितार वाद्य की छात्रा है अतः उत्सुकता एवं कौतुहल वश प्रस्तुत विषय- "सितार की प्रचलित गत शैली एवं उसमें हुए परिवर्तनों का विश्लेषणात्मक अध्ययन (विशेषकर इटावा घराने के संदर्भ में) पर जानकारी प्राप्त करने हेतु शोध विषय के रूप में चयन किया गया है।

विषय- वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सितार के गत शैली में हुए परिवर्तनों का विश्लेषणात्मक अध्ययन (विशेषकर इटावा घराने के सन्दर्भ में)।

संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण- संबंधित साहित्य के सर्वेक्षण के अंतर्गत शोधकत्री को सभी प्रकार की पुस्तक, ज्ञानकोशों, पत्र-पत्रिकाओं व इंटरनेट की सहायता से चयनित विषय की रूपरेखा तैयार करने व शोध कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिली है संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण के अंतर्गत शोधकत्री द्वारा यह प्रमाणित किया जाता है कि यह शोध कार्य पूर्व में नहीं किया गया हैऔर साथ ही शोधकत्री ने अपने विषय से संबंधित उपलब्ध शोध प्रबंध तथा लघु शोध प्रबंध आदि का अध्ययन किया है जिसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है -

- सितार वादन में गत शैली का विकास एवं महत्व-देवी, सुमित्रा
- A Critical study of gats in sitar and sarod playing- shukla, siddharth shankar
- सितार वादन में मिजराब के बोलों द्वारा गतकारी का बदलता स्वरूप एवं प्रभाव एक
- अध्ययन-सरिता।
- सितार वादन की शैलियाँ-भटनागर डॉ. रजनी।
- बीसवीं शताब्दी के सितार वादकों की वादन शैली एवं परम्परा-वास्तव, श्री प्रीति।
- सितार वादन में गत का विकास (विकास एवं महत्व)- चौहान, देवी सुमित्रा।

- जहान-ए-सितार-सितार वादन की विभिन्न शैलियों का उद्भव एवं विकास- राय, सुदीप एस वी

विषय से प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या-

गत-विभिन्न प्रकार के वाद्यों पर बजायी जाने वाली ताल में बंधी हुई रचनाएं गत कहकर पुकारी जाती हैं

शैली- शैली से तात्पर्य अपनी रीति या तरीका जिसके माध्यम से किसी व्यक्ति एवं विधा विशेष का सहज भास हो जाता है।

बाज- बाज हिंदी शब्द, 'बजाना' से निकला है और यह एक विशेष घराने की वादन शैली को दर्शाता है।

तत- तत से तात्पर्य तारों द्वारा बजाया जाने वाला वाद्य जिसे कोण, नख या मिजराब के आघात से बजाया जाता है।

त्रितंत्री- त्रितंत्री से तात्पर्य तीन तारों वाला वाद्य।

अध्ययन के उद्देश्य-

- सितार की वादन शैली का अध्ययन करना।
- सितार वाद्य का परिचयात्मक अध्ययन करना
- सितार के घरानों का अध्ययन करना।
- इटावा घराने के प्रमुख कलाकारों के विषय में जानकारी एकत्रित करना ताकि उसका गुणवत्तापूर्ण विश्लेषण किया जा सके।
- इटावा घराने की गत शैली एवं उसमें हुए परिवर्तनों का सूक्ष्मता से अध्ययन करना।

विषय का परिसीमांकन-

शोधकर्त्री ने समय सीमा को ध्यान में रखते हुए सितार के घरानों में से केवल इटावा घराने का चयन किया है। इसमें इटावा घराने की उत्पत्ति व विकास, सितार वाद्य की शैली में हुए परिवर्तनों में इटावा घराने के कलाकारों का योगदान पर प्रकाश डाला जायेगा।

शोध के श्रोत- विषय से संबंधित तत्वों का संकलन पुस्तकालय, संग्रहालय, दृश्य-श्रव्य सामग्री इंटरनेट एवं संगीत

जगत के कलाकारों से विचार विमर्श कर एवं साक्षात्कार के माध्यम से किया जायेगा।

शोध का महत्व-

प्रस्तुत विषय शोध अध्ययन की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। क्यंूकि इस शोध प्रबंध के माध्यम से इटावा घराने के कलाकारों द्वारा सितार गत वादन की शैली में क्या-क्या महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए या इटावा घराने के सुदृढ़ बनाने में, सुविकसित करने में जिन महान स्तंभ कलाकारों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया आदि पक्षों की जानकारी प्राप्त होगी जो शोध अध्ययन की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है व आगे आने वाले शोध छात्र-छात्राओं, संगीत जिज्ञासुओं आदि को भी मार्गदर्शन प्राप्त हो सकेगा।

अतः शोधकर्त्री द्वारा यह किये जाने वाला कार्य सार्थक भी होगा।

अध्ययन का विभाजन-

- भूमिका
- संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण
- सितार वाद्य का परिचय
- सितार वाद्य के घरानों का परिचय
- इटावा घराने का परिचायात्मकः अध्ययन
- इटावा घराने के प्रमुख कलाकारों का योगदान
- इटावा घराने में गत शैली एवं उसमें हुए परिवर्तन का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।
- उपसंहार

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. भटनागर, रजनी डॉ., सितार-वादन की शैलियों पब्लिशर डिस्ट्रीब्यूटर नई दिल्ली।

2. शर्मा, अमिता, सितार वादन एवसंगीत वाद्य, अभिषेक पब्लिकेशन चंडीगढ़

3 देवी, सुमित्रा, सितार वादन में गत शैली का विकास एवं महत्व

4. A Critical study o gats in sitar and sarod playing- shuka, siddharth shankar

5. सितार वादन में मिजराब के बोलों द्वारा गतकारी का बदलता स्वरूप एवं प्रभाव एक अध्ययन-सरिता

6. सितार वादन की शैलियाँ-भटनागर, डॉ. रजनी

7. वास्तव, श्री प्रीति, बीसवीं शताब्दी के सितार वादकों की वादन शैली एवं परम्परा

8. देवी सुमित्रा, सितार वादन में गत का विकास (विकास एवं महत्व) चौहान,

9. राय, सुदीप एस वी, जहान ए सितार-सितार वादन की विभिन्न शैलियों का उद्भव एवं विकास-

10. अरोड़ा शालू, सितार वाद्य की मध्य लय की गतों के स्वरूप का विश्लेषणात्मक अध्ययन कतिपय रागों के संदर्भ में।

11. जैन डॉ. वीणा, सेनिया घराना और सितार वादन शैली, कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।